IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय शेयर बाज़ार इतिहास की प्रमुख अनपेक्षित गिरावटों का ज्योतिषशास्त्रीय समीक्षात्मक विश्लेषण

डॉ. राजीव रंजन,
सहायक आचार्य (ज्योतिष), संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007.

शोधसार

भारतीय शेयर बाज़ार समकालीन आर्थिक तंत्र का एक बहुस्तरीय तथा अत्यधिक संवेदनशील घटक है, जिसकी गतिशीलता को केवल मात्रात्मक आर्थिक सूचकों, नीतिगत हस्तक्षेपों अथवा वैश्विक वित्तीय घटनाओं के माध्यम से पूर्णतः समझा जाना प्रायः पर्याप्त नहीं सिद्ध होता। ऐतिहासिक अनुभव यह दर्शाते हैं कि कई अवसरों पर बाज़ार में तीव्र एवं अप्रत्याशित गिरावटें ऐसे कालखंडों में प्रकट होती हैं, जहाँ प्रचलित आर्थिक प्रतिमान इन परिवर्तनों की सम्यक व्याख्या प्रस्तुत करने में सीमित प्रतीत होते हैं। इसी बौद्धिक पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोधपत्र भारतीय शेयर बाज़ार की चुनिंदा अनपेक्षित गिरावटों का ज्योतिषशास्त्रीय दृष्टिकोण से समीक्षात्मक परीक्षण करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन ज्योतिषशास्त्र को बाज़ार घटनाओं का निर्धारक तंत्र मानने का दावा नहीं करता, बल्कि इसे एक वैकल्पिक व्याख्यात्मक उपकरण के रूप में स्वीकार करता है, जो समय-चक्र, सामूहिक निवेश व्यवहार तथा बाज़ार मनोविज्ञान के सूक्ष्म आयामों को समझने में सहायक हो सकता है। शोध में चयनित ऐतिहासिक गिरावटों को ग्रहों की सापेक्षिक स्थिति, संक्रमण, वक्री गति एवं युति जैसे ज्योतिषीय मानकों के संदर्भ में विश्लेषित किया गया है, जिससे यह परीक्षण किया जा सके कि क्या इन घटनाओं के साथ कोई कालगत संरचनात्मक साम्य परिलक्षित होता है। अध्ययन की पद्धति स्पष्टतः अंतःअनुशासनात्मक है, जिसमें अर्थशास्त्र, व्यवहारिक वित्त (behavioural finance) तथा पारंपरिक ज्योतिषीय संहिता सिद्धांतों का सैद्धांतिक समन्वय किया गया है। संहिता साहित्य में वर्णित सामाजिक-राजनीतिक अस्थिरताओं तथा सामूहिक भय से संबंधित अवधारणाओं को भी विश्लेषणात्मक संदर्भ के रूप में ग्रहण किया गया है। निष्कर्षतः यह शोध इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि ज्योतिषीय ग्रहयोगों का विवेकपूर्ण एवं आलोचनात्मक अध्ययन भारतीय शेयर बाज़ार की अनपेक्षित अस्थिरताओं को समझने हेतु एक पूरक बौद्धिक परिप्रेक्ष्य प्रदान कर सकता है, बशर्ते इसे पूर्वानुमानात्मक सत्य के स्थान पर विश्लेषणात्मक संवाद के रूप में स्थापित किया जाए।

कुंजी शब्द: भारतीय शेयर बाज़ार, अनपेक्षित गिरावट, ज्योतिषशास्त्र, ग्रहयोग, बाज़ार मनोविज्ञान, अंतःअनुशासनात्मक अध्ययन, बाज़ार अस्थिरता, निवेश व्यवहार

ज्योतिषशास्त्र भारतीय ज्ञान परंपरा में वेदांगों के अंतर्गत एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं आधारभूत शास्त्र के रूप में प्रतिष्ठित रहा है। प्राचीन काल में इसका मुख्य प्रयोजन यज्ञ, अनुष्ठान तथा धार्मिक कर्मकांडों के लिए उपयुक्त काल-निर्धारण और शुभ मुहूर्त के चयन से संबद्ध था। इसी कारण वैदिक परंपरा में ज्योतिष को 'वेद पुरुष का नेत्र' कहा गया है, जो काल और दिशा का बोध कराता है। पाणिनीय शिक्षा में उल्लिखित श्लोकों के माध्यम से भी यह स्पष्ट होता है कि जिस प्रकार नेत्र के बिना दृष्टि संभव नहीं, उसी प्रकार कालज्ञान के बिना वैदिक कर्मों की सम्यक समझ अधूरी मानी जाती है। कालांतर में विभिन्न आचार्यों एवं विद्वानों के सतत अनुसंधान के परिणामस्वरूप ज्योतिषशास्त्र का स्वरूप अधिक व्यापक एवं बहुआयामी होता गया। इस शास्त्र को केवल धार्मिक अथवा कर्मकांडीय सीमाओं में न रखकर प्राकृतिक, सामाजिक और आर्थिक घटनाओं की व्याख्या के एक सैद्धांतिक ढाँचे के रूप में भी विकसित किया गया। इसी विकासक्रम में ज्योतिषशास्त्र का त्रिस्कंधात्मक विभाजन स्थापित हुआ, जिसके अंतर्गत सिद्धांत, होरा और संहिता—तीन प्रमुख स्कंध माने गए। सिद्धांत स्कंध में ग्रहों की गति, काल-गणना तथा गणितीय आधारों का विवेचन मिलता है; होरा स्कंध व्यक्ति विशेष के जीवन से संबंधित फलित पक्ष को प्रस्तुत करता है; जबकि संहिता स्कंध सामाजिक, प्राकृतिक एवं सामूहिक घटनाओं के अध्ययन का आधार प्रदान करता है। संहिता ज्योतिष विशेष रूप से राष्ट्र, समाज, राजनीति, प्राकृतिक आपदाओं तथा सामूहिक चेतना से जुड़ी घटनाओं की व्याख्या करता

है। ग्रहों और नक्षत्रों की सापेक्षिक स्थिति, उनकी गति, गोचर, अस्त-उदय तथा वक्री अवस्थाओं के आधार पर व्यापक स्तर पर होने वाले परिवर्तनों का विश्लेषण इस शाखा का प्रमुख विषय रहा है। आधुनिक संदर्भ में इसी संहिता परंपरा को आर्थिक एवं वित्तीय घटनाओं के अध्ययन में एक वैकल्पिक दृष्टिकोण के रूप में देखा जाने लगा है। भारतीय प्रतिभूति बाज़ार आधुनिक अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, जो निवेश, पूंजी निर्माण और आर्थिक विकास की प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका निभाता है। यह बाज़ार न केवल कंपनियों और सरकारों को पूंजी जुटाने का माध्यम प्रदान करता है, बल्कि निवेशकों को आर्थिक सहभागिता का अवसर भी देता है। संरचनात्मक दृष्टि से प्रतिभूति बाज़ार को दो भागों प्राथमिक और द्वितीयक बाज़ार में विभाजित किया जाता है। प्राथमिक बाज़ार में नई प्रतिभूतियों का निर्गमन होता है, जबकि द्वितीयक बाज़ार में पूर्व में जारी प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय संपन्न होता है। भारत में प्रतिभूति बाज़ार का नियमन भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (SEBI) द्वारा किया जाता है, जिसके अंतर्गत विभिन्न सूचकांकों के माध्यम से बाज़ार की गतिविधियों का मूल्यांकन किया जाता है। सेंसेक्स, निफ्टी और बैंक निफ्टी जैसे प्रमुख सूचकांक देश की आर्थिक प्रवृत्तियों और निवेश वातावरण को प्रतिबिंबित करते हैं। यद्यपि इन सूचकांकों की चाल को सामान्यतः आर्थिक आँकड़ों, नीतिगत निर्णयों और वैश्विक परिस्थितियों से जोड़कर देखा जाता है, फिर भी कई बार बाज़ार में ऐसी अस्थिरताएँ उत्पन्न होती हैं जिनकी तात्कालिक व्याख्या केवल पारंपरिक आर्थिक विश्लेषण से संभव नहीं हो पाती। इसी बिंदु पर ज्योतिषशास्त्रीय दृष्टिकोण एक वैकल्पिक विश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। संहिता ज्योतिष के अंतर्गत ग्रहों की सापेक्षिक गति, नक्षत्रीय गोचर तथा ग्रहयोगों के अध्ययन के माध्यम से सामूहिक व्यवहार, भय, अनिश्चितता और अस्थिरता जैसे भावों को समय-चक्र से जोड़कर समझने का प्रयास किया जाता है। ग्रहों की वक्री अवस्था, अस्त-उदय तथा परस्पर युति को उन कालखंडों से संबद्ध किया जाता है, जिनमें सामाजिक अथवा आर्थिक असंतुलन अधिक प्रकट होता है। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि ज्योतिषशास्त्र को इस अध्ययन में किसी एकमात्र निर्धारक उपकरण के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है। बल्कि इसे एक पूरक बौद्धिक ढाँचे के रूप में ग्रहण किया गया है, जो निवेशकों की सामूहिक मानसिकता, बाज़ार मनोविज्ञान तथा कालगत प्रवृत्तियों को समझने में सहायता कर सकता है। प्रस्तुत शोधपत्र इसी दृष्टिकोण के आधार पर भारतीय प्रतिभूति बाज़ार में विशिष्ट कालखंडों में आई गिरावटों का ज्योतिषीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे बाज़ार अस्थिरता के बहुआयामी स्वरूप को अधिक व्यापक संदर्भ में समझा जा सके।

ग्रहों के प्रभाव क्षेत्र एवं वित्तीय बाज़ार से उनका संबंध

भारतीय ज्योतिष परंपरा में ग्रहों को केवल खगोलीय पिंडों के रूप में नहीं, बल्कि भौतिक एवं आर्थिक गतिविधियों के प्रतीकात्मक प्रतिनिधि के रूप में भी समझा गया है। प्रत्येक ग्रह का एक विशिष्ट प्रभाव क्षेत्र माना गया है, जो सामाजिक, औद्योगिक तथा आर्थिक क्रियाकलापों से संबद्ध होता है। उदाहरणतः सूर्य को राज्यकोष, प्रशासनिक संरचना तथा औषधीय एवं प्राकृतिक संसाधनों से जोड़ा जाता है, जबकि चंद्रमा दुग्ध उत्पादों, जल-आधारित वस्तुओं और उपभोक्ता आवश्यकताओं का प्रतिनिधित्व करता है। मंगल को भूमि, खनिज, निर्माण तथा ऊर्जा-संबंधित क्षेत्रों से संबद्ध माना गया है। इसी प्रकार बुध व्यापार, आयात–निर्यात, बैंकिंग प्रणाली और परामर्श सेवाओं से संबंधित गतिविधियों का संकेतक माना जाता है। बृहस्पति का प्रभाव कृषि उपज, वित्तीय स्थिरता तथा मूल्यवान धातुओं से जोड़ा जाता है, जबकि शुक्र उपभोग, सौंदर्य उद्योग, रासायनिक उत्पादों और मनोरंजन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। शनि को भारी उद्योग, उत्पादन इकाइयों, लौह एवं पेट्रोलियम जैसे क्षेत्रों से संबंधित माना गया है। राहु और केतु को विशेष रूप से बाज़ार की अनिश्चितता, अचानक उतार–चढ़ाव तथा विदेशी तत्वों के प्रभाव से जोड़ा जाता है। ज्योतिषीय ग्रंथों में वर्णित इन ग्रह-संबंधों के आधार पर खगोलीय गणनाओं द्वारा बाज़ार में संभावित तेजी अथवा मंदी की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया जाता है। विशेष रूप से ग्रहों की पारस्परिक दूरी, दृष्टि, संयोग और गोचर को ऐसे कालखंडों से जोड़कर देखा जाता है, जिनमें वित्तीय अस्थिरता अधिक परिलक्षित होती है। प्रस्तुत शोध में इन्हीं ज्योतिषीय मानकों के आधार पर प्रतिभूति बाज़ार में आई गिरावटों के संभावित कारणों की विवेचना की गई है। यहाँ यह भी रेखांकित किया गया है कि वित्तीय बाज़ार का अध्ययन केवल व्यक्तिगत (व्यष्टि) स्तर पर नहीं, बल्कि सामूहिक (समष्टि) परिप्रेक्ष्य में किया जाना अधिक उपयुक्त है। इसी कारण, पारंपरिक नौ ग्रहों के साथ-साथ प्लूटो, यूरेनस और नेपच्यून जैसे बाह्य ग्रहों के प्रभाव को भी बड़े पैमाने पर होने वाले बाज़ार परिवर्तनों के संदर्भ में विश्लेषणात्मक दृष्टि से सम्मिलित किया गया है। यह समन्वित दृष्टिकोण वित्तीय बाज़ार की जटिल गतिशीलता को समझने में एक व्यापक बौद्धिक आधार प्रदान करता है।

प्रतिभूति बाजार में ग्रहों का प्रभाव

भारतीय प्रतिभूति बाज़ार की गतिविधियाँ केवल आर्थिक आँकड़ों, नीतिगत घोषणाओं अथवा वैश्विक संकेतकों तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि इनमें समय-तत्त्व, सामूहिक निवेश व्यवहार तथा मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका परिलक्षित होती है। भारतीय ज्योतिष परंपरा में ग्रहों को इन सामूहिक प्रवृत्तियों के प्रतीकात्मक संकेतक के रूप में देखा गया है। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य प्रतिभूति बाज़ार में तेजी एवं मंदी की प्रवृत्तियों को विभिन्न ग्रहों की स्थिति, गति एवं पारस्परिक संबंधों के आलोक में समीक्षात्मक रूप से समझना है। प्रस्तुत अध्ययन इन सभी ग्रहों की भूमिका को किसी निर्णायक भविष्यवाणी के रूप में नहीं, बल्कि एक पूरक विश्लेषणात्मक ढाँचे के रूप में ग्रहण करता है। शोध की पद्धति अंतःअनुशासनात्मक है, जिसमें

पारंपरिक आर्थिक विश्लेषण, निवेश मनोविज्ञान तथा ज्योतिषीय सिद्धांतों का समन्वय किया गया है। निष्कर्षतः यह शोध इस संभावना की ओर संकेत करता है कि ग्रहों की स्थिति और गति का अध्ययन प्रतिभूति बाज़ार की जटिल गतिशीलता को समझने में एक वैकल्पिक और पूरक बौद्धिक परिप्रेक्ष्य प्रदान कर सकता है, बशर्ते इसे वैज्ञानिक विवेक और समीक्षात्मक दृष्टि के साथ उपयोग में लाया जाए। भारतीय प्रतिभूति बाज़ार के व्यवहार को समझने के लिए अब तक प्रचलित अध्ययन प्रायः आर्थिक संकेतकों, मौद्रिक नीतियों, वैश्विक घटनाओं तथा निवेशक मनोविज्ञान तक सीमित रहे हैं। तथापि, भारतीय बौद्धिक परंपरा में समय (काल), गति (गति-तत्त्व) और परिवर्तन को एक समग्र दृष्टि से देखने की परंपरा रही है, जिसमें ज्योतिषशास्त्र को एक कालिक-संकेतक प्रणाली (temporal indicator system) के रूप में विकसित किया गया। इस संदर्भ में ग्रहों की स्थिति, गोचर, वक्री-मार्गी अवस्था तथा पारस्परिक संबंधों को प्रत्यक्ष कारणात्मक तत्व के रूप में नहीं, बल्कि बाज़ार प्रवृत्तियों के सहसंबंधात्मक संकेत (correlational markers) के रूप में समझा जा सकता है।

सूर्य को भारतीय ज्योतिष में केवल खगोलीय पिंड न मानकर संरचनात्मक नेतृत्व, सत्ता और स्थायित्व का प्रतीक माना गया है। प्रतिभूति बाज़ार के संदर्भ में सूर्य की भूमिका को बाज़ार की समग्र दिशा और दीर्घकालिक प्रवृत्ति से जोड़ा गया है। जब सूर्य अन्य ग्रहों के कारण अस्त अवस्था में आता है, तब इसे बाज़ार में trend inflection point के रूप में व्याख्यायित किया जाता है, जहाँ पूर्ववर्ती तेजी या मंदी की दिशा में परिवर्तन की संभावना बढ़ जाती है। अग्नि और वायु तत्व की राशियों में सूर्य का गोचर ऐतिहासिक रूप से बाज़ार में सक्रियता और जोखिम-स्वीकार्यता की वृद्धि से सहसंबद्ध पाया गया है। इसी प्रकार सूर्य पर शनि, मंगल अथवा राहु जैसे ग्रहों का प्रभाव बाज़ार की दिशा में तीव्रता या अस्थिरता के संकेत उत्पन्न करता है। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि यह विश्लेषण किसी अनिवार्य परिणाम का दावा नहीं करता, बल्कि संभाव्य प्रवृत्तियों की पहचान करता है।

चंद्रमा को उसकी शीघ्रगामी प्रकृति के कारण अल्पकालिक बाज़ार व्यवहार, निवेशक भावनाओं और दैनिक उतार-चढ़ाव से जोड़ा गया है। चंद्र पक्षों के माध्यम से बाज़ार मनोदशा के चक्रीय स्वरूप को समझने का प्रयास किया जाता है। शुक्ल पक्ष में भावनात्मक संतुलन और अपेक्षाकृत स्थिर निर्णय-प्रवृत्ति देखी जाती है, जबकि कृष्ण पक्ष में अनिश्चितता और तीव्र प्रतिक्रिया की प्रवृत्ति बढ़ने की संभावना मानी जाती है। चंद्रमा का नक्षत्रीय संदर्भ विशेष रूप से तरल वस्तुओं, उपभोग आधारित क्षेत्रों और अल्पकालिक सट्टात्मक गतिविधियों के साथ सहसंबद्ध पाया गया है। यह विश्लेषण चंद्रमा को **sentiment proxy** के रूप में प्रस्तुत करता है, न कि मूल्य-निर्धारण के प्रत्यक्ष कारक के रूप में।

मंगल को गति, ऊर्जा और जोखिम का प्रतीक ग्रह माना जाता है। बाज़ार विश्लेषण में मंगल की भूमिका तीव्र उतार-चढ़ाव, आक्रामक निवेश व्यवहार और अचानक मूल्य परिवर्तन के संदर्भ में देखी जाती है। अग्नि और वायु तत्व राशियों में मंगल का गोचर बाज़ार में सक्रियता और तीव्रता से जुड़ा पाया गया है, जबकि जल तत्व राशियों में इसकी उपस्थिति कभी-कभी अप्रत्याशित अस्थिरता को जन्म देती है। मंगल की वक्री अवस्था को विशेष रूप से **volatility amplification phase** के रूप में देखा गया है, जहाँ जोखिम की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। यह व्याख्या मंगल को एक **risk-intensity indicator** के रूप में स्थापित करती है।

बुध को व्यापार, सूचना प्रवाह और संचार का प्रतिनिधि ग्रह माना जाता है। प्रतिभूति बाज़ार में इसका महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि आधुनिक बाज़ार सूचना-संवेदनशील (information-sensitive) होते हैं। बुध की शीघ्र गति इसे अल्पकालिक समाचार प्रभावों, अफ़वाहों और निवेशक प्रतिक्रिया से जोड़ती है। वक्री बुध की अवस्था को सूचना भ्रम, पुनर्मूल्यांकन और बाज़ार में अस्थायी असंतुलन के चरण के रूप में देखा जाता है। इस प्रकार बुध को बाज़ार में **information volatility** के संकेतक के रूप में समझा जा सकता है।

बृहस्पति को परंपरागत रूप से विस्तार, स्थिरता और दीर्घकालिक संतुलन का ग्रह माना गया है। इसकी मंद गति इसे दीर्घकालिक बाज़ार चक्रों से जोड़ती है। जब बृहस्पति अनुकूल स्थिति में होता है, तो बाज़ार में स्थायित्व और क्रमिक वृद्धि की प्रवृत्ति देखी जा सकती है; वहीं अशुभ प्रभाव या वक्री अवस्था में यह बाज़ार में संरचनात्मक पुनर्संयोजन और धीमी गति के चरणों से सहसंबद्ध होता है। यहाँ बृहस्पति को **macro-stability moderator** के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

शुक्र का संबंध उपभोग, विलास और सामाजिक संतोष से है। बाज़ार के संदर्भ में इसका प्रभाव उपभोक्ता-संबंधी क्षेत्रों, फैशन, मनोरंजन और लक्ज़री से जुड़े उद्योगों में अपेक्षाकृत अधिक दिखाई देता है। शुक्र की स्थिति को बाज़ार में संतुलन और उपभोग प्रवृत्ति के संकेतक के रूप में देखा गया है, न कि समग्र बाज़ार दिशा के निर्णायक तत्व के रूप में।

शनि को दीर्घकालिक अनुशासन, संरचना और नियमन का प्रतीक माना गया है। इसकी धीमी गति इसे बाज़ार के दीर्घकालिक ढाँचागत परिवर्तनों, नीति प्रभावों और संस्थागत अनुशासन से जोड़ती है। शनि की वक्री अवस्था को बाज़ार में दबाव, पुनर्संरचना और दीर्घकालिक मंदी या स्थिरता के चरणों के साथ सहसंबद्ध किया गया है। इस प्रकार शनि को **structural constraint indicator** के रूप में समझा जा सकता है।

राहु और केतु को अनिश्चितता, असामान्यता और प्रणालीगत झटकों से जोड़ा गया है। इनके प्रभाव को बाज़ार में अचानक उतार-चढ़ाव, सट्टात्मक उछाल और अप्रत्याशित घटनाओं के संदर्भ में देखा जाता है। आधुनिक वित्तीय शब्दावली में इन्हें **systemic shock variables** के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है।

यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो जैसे बाह्य ग्रहों को दीर्घकालिक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के संकेतक के रूप में देखा गया है। यूरेनस को नवाचार और अप्रत्याशित परिवर्तन, नेप्च्यून को भ्रम और सट्टात्मक अतिरेक, तथा प्लूटो को संरचनात्मक रूपांतरण से जोड़ा गया है। इन ग्रहों का प्रभाव तत्काल नहीं बल्कि दीर्घकालिक और पीढ़ीगत होता है, जो बाज़ार के मूल ढाँचे में परिवर्तन की ओर संकेत करता है।

समग्रतः यह विश्लेषण स्पष्ट करता है कि ग्रहगत प्रभावों को यदि **संकेतात्मक, सहसंबंधात्मक और बहु-विषयी दृष्टिकोण** से देखा जाए, तो वे प्रतिभूति बाज़ार अध्ययन में एक वैकल्पिक, किंतु अकादमिक रूप से विवेच्य ढाँचा प्रदान कर सकते हैं। यह अध्ययन ज्योतिष को भविष्यवाणी का उपकरण न मानकर, बाज़ार व्यवहार को समझने की एक **सांस्कृतिक-विश्लेषणात्मक विधि** के रूप में प्रस्तुत करता है।

ग्रह विश्लेषण तालिका

ग्रह	**विश्लेषणात्मक भूमिका**	**बाज़ार स्तर**	**Methodological Interpretation**
सूर्य	संरचनात्मक दिशा	दीर्घकालिक	Trend orientation indicator
चंद्रमा	भावनात्मक चक्र	अल्पकालिक	Sentiment proxy
मंगल	गति व जोखिम	मध्यम अवधि	Volatility signal
बुध	सूचना संवेदनशीलता	अल्प–मध्यम	Communication intensity
बृहस्पति	विस्तार/स्थिरता	दीर्घकालिक	Growth moderation
शुक्र	उपभोग संतुलन	दीर्घकालिक	Consumption sentiment
शनि	अनुशासन/नियमन	दीर्घकालिक	Structural constraint
राहु-केतु	अनिश्चितता	प्रणालीगत	Shock indicator
बाह्य ग्रह	संरचनात्मक परिवर्तन	पीढ़ीगत	Transformational signal

विगत वर्षों में भारतीय प्रतिभूति बाजार में अचानक आई बड़ी गिरावटें -

बाजार में गिरावट की तिथि	सेंसेक्स	निफ्टी
21 जनवरी 2008	-7.4%	-8.7%
24 अगस्त 2015	-5.94%	-5.92%
12 मार्च 2020	-8.18%	-8.30%
16 मार्च 2020	-7.9%	-7.6%
4 जून 2024	-5.94%	-5.93%

सेंसेक्स चार्ट 2008,2015,2020,2024

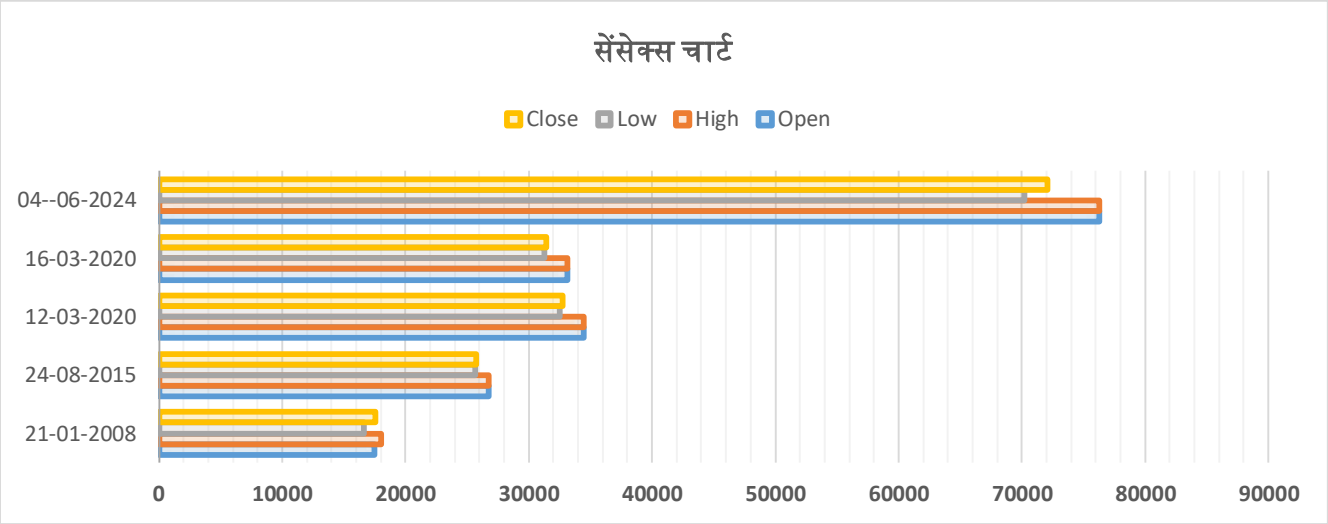

ग्राफ द्वारा महत्वपूर्ण तिथि में सेंसेक्स सूचकांक में ओपन, हाई, लो, क्लोज़ का विवरण प्रस्तुत है |

सेंसेक्स तथा निफ्टी में आई गिरावट का तुलनात्मक चित्रण :-

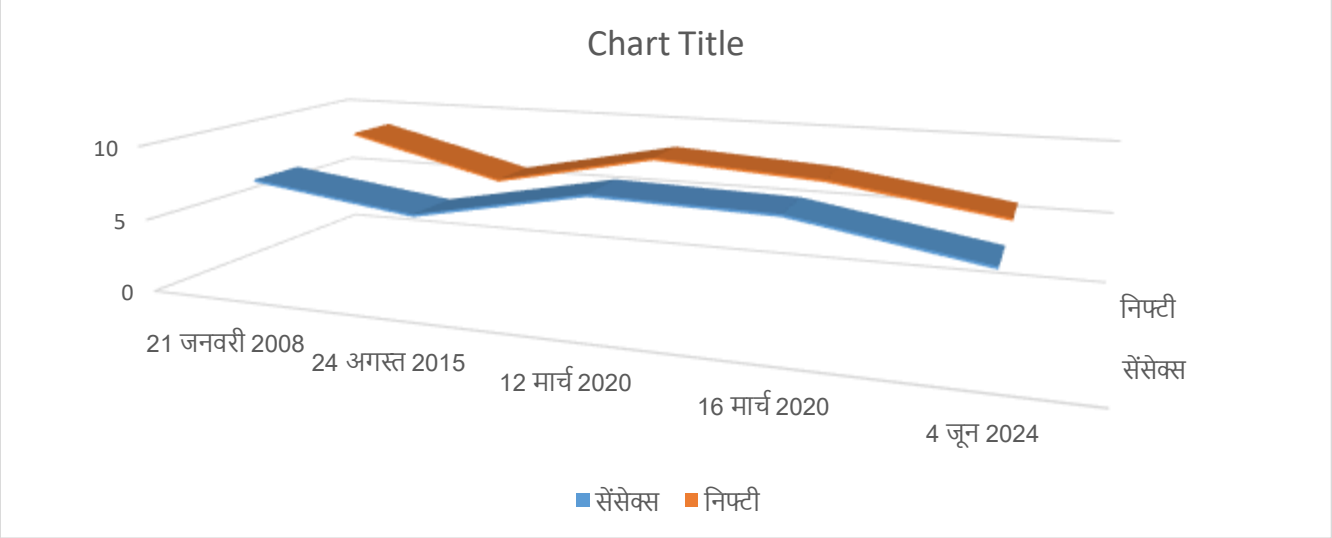

1 जनवरी 2008 की गिरावट : ज्योतिषीय-सहसंबंधात्मक विश्लेषण

21 जनवरी 2008 का दिन वैश्विक वित्तीय इतिहास में अत्यधिक अस्थिरता के चरण के रूप में चिह्नित किया जाता है। यह काल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उभरती वैश्विक मंदी की पृष्ठभूमि से प्रभावित था, जिसका प्रभाव प्रमुख वैश्विक शेयर बाज़ारों के साथ-साथ भारतीय प्रतिभूति बाज़ार पर भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ। इस दिन भारतीय बाज़ार में तीव्र गिरावट दर्ज की गई, जहाँ सेंसेक्स लगभग 7.4 प्रतिशत तथा निफ्टी लगभग 8.7 प्रतिशत तक फिसल गया। आर्थिक कारणों के साथ-साथ, यदि इस घटना को ज्योतिषीय काल-संकेतों के सहसंबंधात्मक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो कुछ उल्लेखनीय ग्रहगत संयोग उस समय विद्यमान थे, जिन्हें बाज़ार की मनोदशा और अस्थिरता के संकेतक के रूप में पढ़ा जा सकता है।

इस अवधि में सूर्य मकर राशि में गोचररत था, जो शनि की राशि मानी जाती है, तथा उत्तराषाढ़ नक्षत्र में स्थित था, जिसका स्वामी स्वयं सूर्य है। परंपरागत ज्योतिषीय व्याख्या के अनुसार, सूर्य का शनि-शासित राशि में तथा स्वनक्षत्र में स्थित होना बाज़ार की गति में संकुचन, दबाव और मंदी की प्रवृत्तियों से सहसंबद्ध माना जाता है। इसी समय वक्री मंगल राशि परिवर्तन कर मिथुन राशि में प्रवेश कर चुका था, जो बुध की राशि है, तथा मृगशिरा नक्षत्र में स्थित था, जिसका स्वामी भी मंगल ही है। यह स्थिति तीव्र मानसिक सक्रियता, अस्थिर निर्णय और बाज़ार में घबराहट के संकेत उत्पन्न करती है।

बुध का मकर राशि में गोचर, जहाँ उसका स्वामी शनि है, तथा धनिष्ठा नक्षत्र में मंगल से संबद्ध होना, सूचना प्रवाह में भ्रम और निवेशक प्रतिक्रिया में तीव्रता के संकेत देता है। इसके अतिरिक्त वक्री शनि का सूर्य की राशि से संबद्ध होना दीर्घकालिक दबाव और संरचनात्मक असंतुलन की ओर संकेत करता है। बाह्य ग्रहों की स्थिति भी उल्लेखनीय रही यूरेनस का कुंभ राशि में, नेपच्यून का मकर राशि में तथा प्लूटो का धनु राशि में गोचर, वैश्विक स्तर पर व्यापक आर्थिक परिवर्तन, अनिश्चितता और प्रणालीगत तनाव के संकेतक माने जाते हैं। विशेष रूप से, वक्री मंगल का चंद्रमा के साथ युति बनाकर शुक्र से दृष्टि संबंध स्थापित करना बाज़ार में भावनात्मक असंतुलन, भय और भ्रम की स्थिति को और अधिक तीव्र करता है। चंद्रमा के साथ मंगल की यह स्थिति अल्पकालिक प्रतिक्रिया, घबराहट आधारित विक्रय और अचानक गिरावट की प्रवृत्तियों से सहसंबद्ध देखी जाती है। समग्र रूप से, 21 जनवरी 2008 की गिरावट को ज्योतिषीय दृष्टि से किसी एक ग्रह के प्रभाव का परिणाम न मानकर, बहुग्रही संयोगों द्वारा निर्मित उस कालिक वातावरण के रूप में समझा जा सकता है, जिसने वैश्विक आर्थिक तनाव के साथ मिलकर भारतीय प्रतिभूति बाज़ार में तीव्र अस्थिरता को जन्म दिया।

24 अगस्त 2015 की गिरावट: ज्योतिषीय-सहसंबंधात्मक विश्लेषण

24 अगस्त 2015 को भारतीय प्रतिभूति बाजार ने अत्यधिक अस्थिरता का अनुभव किया, जब सेंसेक्स लगभग 5.94 प्रतिशत और निफ्टी लगभग 5.92 प्रतिशत तक गिर गया। इस अस्थिरता के समय बाजार पर ग्रहगत स्थितियों के संभावित सहसंबंधों का विश्लेषण करने पर कई उल्लेखनीय ज्योतिषीय संकेत सामने आते हैं। उस अवधि में सूर्य कर्क राशि से सिंह राशि में प्रवेश कर रहा था, जो उसकी स्वभाविक शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, तथा केतु मघा नक्षत्र में स्थित था। इस संयोग ने बाज़ार में मनोवैज्ञानिक अस्थिरता और निवेशकों की अनिश्चित प्रतिक्रिया के संकेत दिए। मंगल कर्क राशि में गोचर कर रहा था, जो उसकी सामान्य ऊर्जा और गतिशीलता को दर्शाता है, जबकि बुध 23-24 अगस्त के बीच सिंह राशि में प्रवेश कर रहा था और उसकी उच्च स्वराशि स्थितियां व्यापारिक गतिविधियों में मंदी की प्रवृत्ति का संकेत करती हैं। गुरु सिंह राशि में गोचर कर रहा था और 12 अगस्त को पश्चिमास्त था, जिससे दीर्घकालिक निवेश निर्णयों में सतर्कता और संभावित मंदी की प्रवृत्तियाँ बनती हैं। शुक्र का सिंह और कर्क राशियों में वक्री एवं मार्गी गोचर, तथा शनि का वृश्चिक राशि में मार्गी और वक्री गति का मिश्रण, निवेशकों की निर्णय प्रक्रिया में अनिश्चितता और गति का असंतुलन उत्पन्न कर रहा था।

बाह्य ग्रहों की स्थिति भी बाजार अस्थिरता से सहसंबंधित रही। यूरेनस गुरु की राशि में वक्री था, नेप्च्यून शनि की मकर राशि में वक्री गति से गोचर कर रहा था और प्लूटो गुरु राशि में वक्री था। इन सभी बाह्य ग्रहों की वक्री स्थिति वैश्विक स्तर पर आर्थिक परिवर्तनों और अनिश्चितता की लंबी अवधि के संकेतक मानी जा सकती है। इसके अतिरिक्त राहु और केतु की स्थिति क्रमशः कन्या और मीन राशि में थी, जो पारंपरिक दृष्टिकोण से तेजी और मंदी के पारस्परिक असंतुलन की स्थिति का सूचक मानी जा सकती है।

विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि इस दिन बाजार में आई अस्थिरता केवल आर्थिक या वैश्विक कारणों से नहीं थी, बल्कि ग्रहों की समग्र सहसंबंधात्मक स्थिति ने निवेशकों की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं और अस्थायी भावनात्मक प्रवृत्तियों को प्रभावित किया। विशेषकर बुध की उच्च स्वराशि स्थिति और वक्री बाह्य ग्रहों की युति ने निवेशकों में सतर्कता और भावनात्मक प्रतिक्रिया बढ़ाई, जिससे बाजार में व्यापक गिरावट और अस्थिरता का वातावरण उत्पन्न हुआ। इस दृष्टि से, ग्रहगत विश्लेषण एक **सहायक और पूरक उपकरण** के रूप में कार्य करता है, जो बाज़ार की अस्थिरता और निवेशकों की सामूहिक प्रतिक्रिया को समझने में सहायक हो सकता है, न कि एक निर्णायक भविष्यवाणी के रूप में।

12–26 मार्च 2020 की बाजार गिरावट: ज्योतिषीय-सहसंबंधात्मक विश्लेषण

12 से 26 मार्च 2020 के मध्य भारतीय प्रतिभूति बाजार ने अत्यधिक अस्थिरता का अनुभव किया, जब वैश्विक कोरोना महामारी के प्रभाव और आर्थिक अनिश्चितताओं के कारण निवेशक मनोवृत्ति में भय और सतर्कता प्रमुख रूप से उभरी। इस अवधि में बाजार ने दो मुख्य गिरावट के दौर देखे; 12 मार्च को सेंसेक्स लगभग 7.9 प्रतिशत और निफ्टी 8.3 प्रतिशत तक गिर गया, जबकि 16 मार्च को सेंसेक्स 7.9 प्रतिशत और निफ्टी 7.6 प्रतिशत तक कम हुआ। आर्थिक कारकों के अलावा, ग्रहगत परिस्थितियों के सहसंबंध का विश्लेषण दर्शाता है कि निवेशकों की सामूहिक प्रतिक्रिया और मानसिक अस्थिरता में ग्रहों की स्थिति का उल्लेखनीय योगदान हो सकता है।

ज्योतिषीय दृष्टि से इस अवधि में सूर्य 14 मार्च को कुंभ राशि से मीन राशि में प्रवेश कर रहा था, जो शनि की राशि और गुरु के नक्षत्र पूर्व भाद्रपद के प्रभाव क्षेत्र में था। मंगल 12 मार्च को धनु राशि से मकर राशि में गोचर कर रहा था, जिससे निवेशकों में जोखिम और सतर्कता के संकेत उत्पन्न हुए। बुध वक्री गति से 10 मार्च को मार्गी गति में प्रवेश कर कुंभ राशि में बना रहा, जो व्यापारिक निर्णयों और तात्कालिक निवेश रणनीतियों में अनिश्चितता को दर्शाता है। शनि अपने स्वराशि मकर में स्थिर था, जबकि सूर्य उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में गोचर कर रहा था, जो दीर्घकालिक और संरचनात्मक आर्थिक अस्थिरता के संकेतक माने जा सकते हैं। बाह्य ग्रहों की स्थिति भी अस्थिरता में सहसंबंध रखती है। राहु और केतु वक्री होकर क्रमशः बुध और गुरु की राशियों में स्थित थे, और नेपच्यून शनि की कुंभ राशि तथा प्लूटो शनि की मकर राशि में गोचर कर रहा था। इस प्रकार, सूर्य, नेपच्यून

और प्लूटो की स्थिति ने बाजार में मंदी और अस्थिरता की परिस्थितियों को प्रबल किया। विशेष रूप से सूर्य का शनि के नक्षत्र में गोचर, और वक्री बाह्य ग्रहों का संयुक्त प्रभाव, निवेशकों की मनोवैज्ञानिक असुरक्षा, जोखिम-भाव और तेजी-मंदी में असंतुलन को दर्शाता है।

इस विश्लेषण से यह प्रतिपादित होता है कि ग्रहगत स्थितियों का अध्ययन केवल बाजार की गिरावट का निर्णायक कारण नहीं है, बल्कि यह निवेशकों की सामूहिक मानसिक स्थिति और दीर्घकालिक आर्थिक अनिश्चितताओं के साथ सहसंबंध स्थापित करने में एक सहायक उपकरण के रूप में कार्य करता है। इस दृष्टि से, ज्योतिषीय सहसंबंधात्मक अध्ययन बाजार व्यवहार के पूरक विश्लेषण के लिए उपयोगी साबित हो सकता है, विशेषकर अस्थिर और अप्रत्याशित परिस्थितियों में।

4 जून 2024 की बाजार गिरावट : ज्योतिषीय-सहसंबंधात्मक विश्लेषण

4 जून 2024 को भारतीय प्रतिभूति बाजार ने महत्वपूर्ण अस्थिरता का अनुभव किया, जब सेंसेक्स लगभग 5.94 प्रतिशत और निफ्टी 5.93 प्रतिशत तक गिर गया। इस गिरावट की पृष्ठभूमि में ग्रहगत परिस्थितियों का सहसंबंधित विश्लेषण निवेशकों की सामूहिक मनोवृत्ति और बाजार की अस्थिरता को समझने में सहायक सिद्ध होता है। इस दिन सूर्य वृषभ राशि में गोचर कर रहा था, जबकि चंद्रमा रोहिणी नक्षत्र में स्थित था। बुध अस्त होकर शुक्र की राशि वृषभ में सूर्य के साथ संचरित हो रहा था, और सूर्य कृतिका नक्षत्र में गोचर कर रहा था। इस प्रकार, एक ही भाव में सूर्य, गुरु, यूरेनस, अस्त बुध और अस्त शुक्र की उपस्थिति बाजार में अस्थिरता के संकेत प्रस्तुत करती है।

शनि अपने स्वराशि कुंभ में और गुरु पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में स्थित था। बाह्य ग्रहों की स्थिति भी बाजार के रुझान पर प्रभाव डाल रही थी; राहु वक्री होकर गुरु की राशि मीन में और केतु बुध की राशि कन्या में गोचर कर रहे थे। यूरेनस वृषभ में, नेपच्यून मीन राशि में और प्लूटो मकर राशि में गोचर कर रहे थे। इस संयोजन से यह संकेत मिलता है कि ग्रहों की अनियमित और अस्त स्थिति निवेशकों की मनोवैज्ञानिक अस्थिरता, जोखिम और अनिश्चितता को प्रबल कर सकती है। विशेष रूप से बुध और शुक्र के अस्त होने से विपरीत आर्थिक संकेत उत्पन्न होते हैं, जिससे बाजार में तेजी के बजाय गिरावट का प्रवृत्ति प्रबल होती है। इस विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ग्रहों की स्थिति केवल तकनीकी या मौलिक आर्थिक संकेतों के पूरक के रूप में विचार की जा सकती है। सूर्य का वृषभ में गोचर, चंद्रमा का रोहिणी नक्षत्र में होना, और अस्त बुध-शुक्र का संयोजन निवेशकों में सतर्कता और संदेह की भावना को बढ़ाता है। इसी तरह, गुरु और यूरेनस की एक ही भाव में स्थिति दीर्घकालिक अस्थिरता का सूचक बनती है। अंततः, इन ज्योतिषीय सहसंबंधों का विश्लेषण वित्तीय बाजार के अस्थायी उतार-चढ़ाव को समझने के लिए एक पूरक दृष्टिकोण प्रदान करता है, विशेष रूप से उन परिस्थितियों में जहां आर्थिक और सामाजिक कारक मिलकर निवेशकों की भावनात्मक प्रतिक्रिया को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार, 4 जून 2024 की गिरावट पर आधारित ग्रहगत अध्ययन यह सुझाता है कि पारंपरिक आर्थिक विश्लेषण के साथ ज्योतिषीय सहसंबंधात्मक दृष्टिकोण निवेशक व्यवहार और बाजार अस्थिरता के पूरक विश्लेषण में उपयोगी हो सकता है, जबकि इसे निर्णायक भविष्यवाणी के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

ग्रहों और नक्षत्रों का वित्तीय एवं सामाजिक प्रभाव: शास्त्रीय ग्रंथों के संदर्भ में विश्लेषण

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति को केवल व्यक्तिगत जीवन की दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों, विशेषकर कृषि, व्यापार और वस्तु मूल्यों पर प्रभाव के रूप में भी देखा गया है। बृहत् संहिता में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि बुध का उदय कभी भी उत्पात रहित नहीं होता है। यह संकेत करता है कि बुध का उदय हमेशा किसी न किसी प्रकार के अस्थिर वित्तीय या प्राकृतिक प्रभावों के साथ होता है, जैसे जल, अग्नि, वायु का भय या अनाज की महँगी या सस्ती। यही सिद्धांत निवेश और वस्तु मूल्यों की अस्थिरता का प्रारंभिक संकेत भी प्रदान करता है।

शनि के प्रभाव का विश्लेषण ग्रंथों में विस्तृत रूप से किया गया है। शनि के गोचर मार्ग और नक्षत्रों के अनुसार आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों में भिन्नता उत्पन्न होती है। आचार्य भद्रबाहुउल्लेख करते हैं कि उत्तर मार्ग में गमन करता शनि यदि नीलवर्ण और स्निग्ध हो, तो इसके फल शुभ होते हैं। यह समय सामूहिक सुख, राजा की संतुष्टि और बीज उत्पत्ति की दृष्टि से लाभकारी माना गया है। इसके विपरीत, जब शनि मध्यम मार्ग में अस्त और उदय प्राप्त करता है, तो परिणाम स्वरूप मध्यम वर्षा, सुभिक्ष धान्य उत्पादन और सामान्य कल्याण होता है। हालांकि, विभिन्न राशियों में शनि का प्रभाव भिन्न होता है। उदाहरणतः मेष राशि में शनि के प्रभाव से धान्य और पशु विनाश, विद्रोह और भय फैला रहता है, जबकि मिथुन राशि में सुख, वर्षा और कृषिकार्य का लाभ होता है। इसी प्रकार, कर्क राशि में रोग, धनहानि और प्रशासनिक द्वन्द्व, सिंह राशि में युद्ध, दुर्भिक्ष और जनसंताप, कन्या में अन्न उत्पादन और आर्थिक स्थिरता, तुला में सीमित वर्षा और धनाभाव, वृश्चिक में महामारी और युद्ध, धनु में कल्याण, मकर में मूल्यवृद्धि और अन्न का नुकसान, एवं मीन में सामाजिक और प्राकृतिक अस्थिरता उत्पन्न होती है। ग्रहों के अतिरिक्त, नक्षत्रों का महत्व भी अत्यंत माना गया है। भद्रबाहु संहिता ग्रंथ में आर्द्रा नक्षत्र के चरणों का वर्णन है जो यह संकेत करता है कि आर्द्रा नक्षत्र के प्रारंभिक चरण में वस्तुओं के मूल्यों में उतार-चढ़ाव और भय का प्रसार होता है, जबकि इसके शेष चरणों में अल्पवृष्टि और महामारी का खतरा अधिक होता है। संध्या कालीन प्रभाव पर आचार्य वसिष्ठ स्पष्ट हैं-

'संध्या समय में सूर्य दर्शन से मूल्य वृद्धि, राजकलह और जलभय के संकेत मिलते हैं'। इसी प्रकार, बुध के शुद्ध और चमकदार स्वरूप का प्रभाव माणिक्य, शंख, स्वर्ण, कमल, पुष्पराग और मरकत जैसे वस्तुओं के मूल्य वृद्धि से जुड़ा है।
यदि बुध की स्थिति अशुद्ध या विकृत हो, तो इसके फलस्वरूप वैश्विक भय, रोग और मूल्य अस्थिरता प्रकट होती है। इसी प्रकार, धान्य और यव के शृंगाकार या पिपीलिकाकार रूप के अनुसार वर्षा, महंगाई और आर्थिक स्थिरता प्रभावित होती है।

शास्त्रीय संदर्भों से स्पष्ट होता है कि ग्रहों और नक्षत्रों का समन्वित विश्लेषण कृषि, वस्तु मूल्यों और आर्थिक स्थिरता का सूचक बनता है। शनि, बुध और सूर्य के संयोजन से स्थानीय और व्यापक आर्थिक परिस्थितियों की दिशा निर्धारित होती है। इस प्रकार, प्राचीन ग्रंथों में वर्णित ज्योतिषीय संकेत न केवल प्राकृतिक और सामाजिक घटनाओं की व्याख्या करते हैं, बल्कि वित्तीय और कृषि क्षेत्रों के उतार-चढ़ाव की पूर्वसूचना भी प्रदान करते हैं।
इस समेकित अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शास्त्रीय ग्रंथों में ग्रह और नक्षत्रों के व्यवहार का विश्लेषण वित्तीय, सामाजिक और प्राकृतिक घटनाओं का पूरक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो आधुनिक आर्थिक और पर्यावरणीय मॉडलिंग में सहायक सिद्ध हो सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य भारतीय प्रतिभूति बाजार में अचानक आई गिरावटों का ज्योतिषीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करना था। अध्ययन में प्रमुख वित्तीय दुर्घटनाओं जैसे 21 जनवरी 2008, 24 अगस्त 2015, 12 और 16 मार्च 2020 तथा 4 जून 2024 के दौरान सक्रिय ज्योतिषीय योगों का व्यवस्थित विवेचन किया गया। इन तिथियों पर विशेष ग्रह स्थिति और युति ने बाजार में अस्थिरता, मंदी और तेजी की अनियमितताओं के संकेत प्रस्तुत किए। विशेष रूप से पाप ग्रहों जैसे शनि, मंगल, राहु और केतु की वक्री अवस्था, दृष्टि या युति के संयोजन को आर्थिक अस्थिरता, निवेशकों में भ्रम और वस्तु मूल्यों में उतार-चढ़ाव का संभावित कारण माना गया। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मंगल-केतु, मंगल-राहु तथा त्रिग्रही योग (शनि-बृहस्पति-मंगल) जैसे संयोजन बाजार में भय, भावनात्मक प्रतिक्रिया और अनियमित निर्णय लेने की प्रवृत्ति को प्रेरित करते हैं। ग्रहों की इस स्थिति के दौरान निवेशक अक्सर अचानक और अपर्याप्त जानकारी के आधार पर निर्णय लेते हैं, जिससे बाजार में तेज गिरावट या अस्थिरता उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त सूर्य-राहु युति और चंद्रमा की पाप ग्रहों से दृष्टि जैसी स्थितियाँ निवेशकों की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं को तीव्र बनाती हैं, जो निवेश प्रवृत्तियों और बाजार के दैनिक उतार-चढ़ाव में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। शास्त्रीय ग्रंथों में वर्णित नक्षत्रीय और ग्रह स्थिति संकेत भी इस शोध में समर्थित पाए गए। उदाहरण के लिए आर्द्रा और पूर्व भाद्रपद नक्षत्रों में शनि की स्थिति, सूर्य और बुध के गोचर तथा यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो जैसी बाह्य ग्रहों की दीर्घकालिक चाल, बाजार में दीर्घकालिक अस्थिरता और वित्तीय मंदी के संकेतक के रूप में देखी गई। इन विश्लेषणों से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि न केवल स्थानीय, बल्कि वैश्विक परिस्थितियों जैसे 2020 में कोरोना महामारी और वैश्विक वित्तीय मंदी के दौरान भी ग्रह स्थिति और योग आर्थिक परिणामों के साथ सुसंगत प्रभाव दिखाते हैं। इसके अतिरिक्त, शास्त्रीय उद्धरण जैसे कि बुध, शनि और अन्य ग्रहों की स्थिति के फल आर्थिक मूल्यों, फसल की उपलब्धता, वस्तु मूल्यों और सामाजिक स्थिरता पर भी दृष्टि प्रदान करते हैं। उदाहरणतः शनि के मध्य मार्ग में गोचर करने पर मध्यम वर्षा, उपज और कल्याण मिलता है, जबकि मेष या सिंह राशि में शनि के प्रभाव से सामाजिक और आर्थिक अशांति उत्पन्न होती है। इसी प्रकार, बुध के स्वच्छ और दिव्य स्वरूप से वस्तु मूल्य और आर्थिक स्थिरता में वृद्धि होती है, जबकि विकृत स्थिति भय और आर्थिक अस्थिरता का संकेत देती है।

अतः यह शोध दर्शाता है कि भारतीय प्रतिभूति बाजार में अचानक आई गिरावट केवल वित्तीय आंकड़ों या वैश्विक घटनाओं के कारण नहीं, बल्कि ग्रहों और नक्षत्रों की जटिल स्थिति और युति के साथ भी जुड़ी हुई प्रतीत होती है। इस दृष्टिकोण से, शास्त्रीय ज्योतिषीय सिद्धांत वित्तीय जोखिम प्रबंधन, निवेश रणनीति और आर्थिक पूर्वानुमान के लिए एक पूरक विश्लेषणात्मक उपकरण के रूप में उपयोगी हो सकते हैं।
अंततः यह निष्कर्ष आधुनिक वित्तीय प्रबंधन और बाजार अध्ययन के लिए भी संकेत प्रदान करता है कि पारंपरिक ज्योतिषीय संकेतों और शास्त्रीय नक्षत्रीय गणनाओं के समेकित विश्लेषण से वित्तीय अस्थिरता, निवेशक मानसिकता और बाजार उतार-चढ़ाव की बेहतर समझ विकसित की जा सकती है। इस प्रकार, शोध न केवल ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या करता है, बल्कि भविष्य में बाजार प्रक्षेपण और जोखिम विश्लेषण के लिए भी संभावित दिशानिर्देश प्रस्तुत करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. वराहमिहिर. *बृहत्संहिता.* व्याख्या पं. बलदेवप्रसादजी मिश्र, खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, 2000.
2. भद्रबाहु. *भद्रबाहु संहिता.* व्याख्या नेमिचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, 2009.
3. वसिष्ठ. *वसिष्ठ संहिता.* संपादक एवं टीकाकार गिरिजाशंकर शास्त्री, मंजुमती टीका सहित, ज्योतिष कर्मकाण्ड एवं अध्यात्म शोध संस्थान, 2006.
4. नारद. *नारद संहिता.* व्याख्या रामजन्म मिश्र, चौखम्भा संस्कृत भवन,2008.
5. कश्यप. *कश्यप संहिता.* संपादक चंद्रमौलि रैणा, चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, 2023.
6. बृहस्पति. *बृहस्पति संहिता.* संपादक एवं टीकाकार गिरिजाशंकर शास्त्री,चौखम्भा संस्कृत भवन,2012.
7. कल्याणवर्मा. *सारावली.* व्याख्या सोमेश्वरनाथ झा, भारतीय विद्या प्रकाशन,2008.
8. रामदीन दैवज्ञ. *बृहद्दैवज्ञरञ्जनम्.* मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास, 2001.
9. त्रिवेदी, हरदेव शर्मा, और गोपेश कुमार ओझा. *व्यापार रत्न.* रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली.
10. शास्त्री, सुदर्शनाचार्य. *तेजी-मंदी विज्ञान.* चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, वाराणसी.
11. शर्मा, प्रदीप. *शेयर मार्केट में बैंक निफ्टी का भविष्य.* स्वयं प्रकाशित.
12. Pesavento, Larry, and Shane Smoleny. *A Trader's Guide to Financial Astrology: Forecasting Market Cycles Using Planetary and Lunar Movements*. John Wiley & Sons, 2014.
13. Williams, David. *Financial Astrology: How to Forecast Business and the Stock Market*. Revised ed., American Federation of Astrologers, 1982.
14. Bucholtz, M. G. *Financial Astrology Almanac*. Wood Dragon Books, annual series.
15. Banerjee, Indrodeep. *Stock Market Muhurtas*. Sagar Publications, 2012.
16. Banerjee, Indrodeep. *Stock Market Astrology*. Sagar Publications, 2010.
17. Banerjee, Indrodeep. *Stock Market Analysis through Kota Chakra*. Sagar Publications, 2011.
18. Chakraborty, Nabanita. *Astro-Trading Secrets: Unlock Stock Market Profits with Planetary Cycles*. Independently Published, 2025.
19. Kumar, Medhansh. *शेयर बाज़ार और ज्योतिष: ग्रहों की चाल से निवेश का ज्ञान.* The Zenith, e-book ed., 2023.